SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 8 | August 2025

नागालैंड के गाँधी: पियोंग तेमजेन जमीर और हिंदी का प्रचार-प्रसार

डॉ. बृजेश कुमार [1], अंशु चन्द्र [2]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर- 797004
ORCID: https://orcid.org/0009-0001-7450-3618
[2] जे.आर.एफ. रिसर्च स्कॉलर, शिक्षक शिक्षा विभाग, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर
ORCID: https://orcid.org/0009-0006-3379-8348

सारांश:

यह शोध-पत्र नागालैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार की ऐतिहासिक यात्रा और इसमें पियोंग तेमजेन जमीर के असाधारण योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पूर्वोत्तर भारत, विशेषतः नागालैंड, अपनी जनजातीय संरचना और बहुभाषिक परिवेश के लिए जाना जाता है, जहाँ हिंदी का प्रवेश एक क्रमिक, संघर्षपूर्ण और सांस्कृतिक संवाद से निर्मित प्रक्रिया रही है। जमीर साहब, जिन्हें 'नागालैंड के गाँधी' कहा जाता है, ने हिंदी को जनजातीय समाज में न केवल शिक्षण भाषा के रूप में स्थापित किया, बल्कि इसे सांस्कृतिक सेतु का रूप भी दिया। अध्ययन गुणात्मक स्वरूप का है, जिसमें ऐतिहासिक-जीवनीपरक शोध पद्धति का उपयोग करते हुए प्राथमिक स्रोत (साक्षात्कार, निजी लेखन, संस्थागत अभिलेख) और द्वितीयक स्रोत (समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकें, रिपोर्ट) से डेटा संकलित किया गया। विश्लेषण थीमैटिक, कालानुक्रमिक और प्रसंग-आधारित तकनीकों से किया गया। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि जमीर साहब के प्रयासों से नागालैंड में हिंदी शिक्षा का संस्थागत विकास हुआ, हिंदी महाविद्यालयों और संगठनों की स्थापना हुई, तथा सामाजिक-सांस्कृतिक एकता को बल मिला। यह अध्ययन नागालैंड में हिंदी के सामाजिक-भाषाई विकास को ऐतिहासिक और शोधपरक दृष्टिकोण से प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत करता है, जो भारतीय भाषाई एकता और सांस्कृतिक समरसता के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कूट-शब्द: नागालैंड, पियोंग तेमजेन जमीर, जनजातीय हिंदी, ऐतिहासिक-जीवनीपरक शोध, हिंदी भाषा.

1. प्रस्तावना

भारत की भाषाई विविधता विश्व में अद्वितीय है, जहाँ प्रत्येक भाषा न केवल संप्रेषण का माध्यम है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, परंपरा और सामाजिक संबंधों का भी प्रतीक है क्योंकि हम जितनी भाषाएँ जानते है उतने ही संस्कृति और समाज से जुड़ते है।। भाषाओं के इस बहुरंगी परिदृश्य में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है, जो विविध भाषाई समुदायों को जोड़ने का माध्यम बनती है (शुक्ल, 2002)। पूर्वोत्तर भारत, विशेषकर नागालैंड, अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना, जनजातीय सामाजिक व्यवस्था और बहुभाषिक वातावरण के लिए जाना जाता है, जहाँ 16 से अधिक मान्यता प्राप्त जनजातियां अपनी-अपनी भाषाओं और सांस्कृतिक धरोहर के साथ निवास करती हैं (नागालैंड इनसायकलोक्लोपेडिया ब्रिटानिका, 2011)।

नागालैंड में हिंदी का प्रवेश और स्वीकार्यता सहज प्रक्रिया नहीं रही है। यह एक क्रमिक, संघर्षपूर्ण और सामाजिक-सांस्कृतिक संवाद से निर्मित यात्रा रही, जिसमें कई व्यक्तित्वों का योगदान रहा है। इन व्यक्तित्वों में पियोंग तेमजेन जमीर का नाम अग्रणी है, जिन्हें नागालैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु अद्वितीय समर्पण और संघर्ष के कारण 'नागालैंड के गाँधी' के रूप में जाना जाता है (सिन्हा, 2024)। जमीर साहब ने न केवल हिंदी को जनजातीय समाज के बीच शिक्षण भाषा के रूप में स्थापित किया, बल्कि इसे सांस्कृतिक सेतु का रूप प्रदान किया, जिसने जनजातीय और मुख्यधारा भारतीय समाज के बीच संवाद और समरसता को सशक्त किया।

उनकी कार्ययात्रा महज भाषाई प्रसार की नहीं थी, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सामाजिक एकजुटता और राष्ट्रीय एकता की जीवंत मिसाल रही है। यह शोध-पत्र नागालैंड में हिंदी के ऐतिहासिक विकास, पियोंग तेमजेन जमीर के योगदान, और जनजातीय समाज के भाषाई-सांस्कृतिक परिदृश्य में हिंदी की भूमिका का निम्नलिखित शोध उद्देश्यों के अंतर्गत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. शोध उद्देश्य

1. नागालैंड में हिंदी भाषा के ऐतिहासिक प्रवेश, प्रसार और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ का विश्लेषण करना।
2. पियोंग तेमजेन जमीर के जीवन, व्यक्तित्व और कार्यों के माध्यम से हिंदी प्रचार-प्रसार की प्रक्रिया तथा संस्थागत विकास में उनके योगदान का मूल्यांकन करना।
3. नागालैंड की जनजातीय सामाजिक संरचना में हिंदी की स्वीकृति और विरोध के कारकों तथा महात्मा गांधी की विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. नागालैंड में हिंदी प्रचार-प्रसार से उत्पन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संवाद और राष्ट्रीय एकता में उसके योगदान का विश्लेषण करना।

3. कार्यप्रणाली

यह अध्ययन गुणात्मक स्वरूप का है, जिसमें ऐतिहासिक-जीवनीपरक शोध पद्धति (Historical-Biographical Method with Qualitative Narrative Analysis) को अपनाया गया है। इस पद्धति का चयन इसलिए किया गया क्योंकि अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पियोंग तेमजेन जमीर के जीवन, कार्यों और नागालैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का क्रमबद्ध एवं प्रसंगानुकूल विश्लेषण करना है (बेर्ग, 2017; कोहेन. एट. ऑल., 2018) ।

डेटा के प्राथमिक स्रोतों में प्रत्यक्षदर्शियों, परिजनों, सहकर्मियों एवं विद्यार्थियों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार, जमीर साहब के निजी लेखन व संस्थागत अभिलेख शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, स्मारिकाएं, प्रकाशित पुस्तकें, शोध-पत्र, ऐतिहासिक दस्तावेज़ और सरकारी/गैर-सरकारी रिकॉर्ड सम्मिलित हैं। डेटा संकलन हेतु अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची, दस्तावेज़ विश्लेषण सूची और फील्ड नोट्स का प्रयोग किया गया। विश्लेषण के लिए थीमैटिक विश्लेषण द्वारा प्रमुख विषयों की पहचान, कालानुक्रमिक विश्लेषण से घटनाओं का समय-क्रमानुसार मूल्यांकन, तथा प्रसंग-आधारित व्याख्या से सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व का आकलन किया गया। यह कार्य नागालैंड में हिंदी के सामाजिक-भाषाई विकास की ऐतिहासिक यात्रा को संरचित, प्रमाणिक और विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करता है।

4. परिणाम एवं चर्चा

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी का विकास

भारत के अभिन्न अंग के रूप में पूर्वोत्तर की समृद्ध लोक परंपरा, संस्कृति, प्राकृतिक विविधतायें, अपार खनिज-संपदाओ के साथ भाषिक दृष्टी से काफी महत्वपूर्ण है। यहाँ विविध भाषा-भाषी लोग निवास तो करते है परन्तु सम्पर्क भाषा के रूप में देखा जाये तो टूटी-फूटी हिंदी ही कारगर है. पूर्वोतर भारत में हिंदी का प्रवेश कब और कैसे हुआ यह ऐतिहासिक शोध का विषय है। प्रागज्योतिषपुर के रूप में वृहत असम का क्षेत्र प्राचीन काल से भारत का हिस्सा है,

इसके साक्ष्य महाभारत काल एवं पुराण कथाओ में मिलते है| हिंदी के आरंभिक काल के कवियों में 'सरहपा तथा मत्स्येन्द्र नाथ का सम्बंध असम से माना जाता है'[1]। इसका प्रमाण दंत कथाओ और अन्य ग्रंथो में मिलता है।

पूर्वोत्तर असम में हिंदी का वास्तविक रूप तब आया जब 1934 में अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ की स्थापना के लिए गाँधी जी असम आये थे। उन्होंने हर जगह अपने सम्बोधन में 'असम के लोगो को हिंदी सिखने की बात कही थी'[2]। गाँधी जी के बातो से प्रभावित होकर श्री पीताम्बर देव गोस्वामी ने गाँधी जी से हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण को शुरू करने का आग्रह किया तो गाँधी जी ने राघव दास को हिंदी का प्रचारक के रूप में नियुक्त करके असम भेजा। राघव दास असम आये और उन्होंने कुछ हिंदी भाषी लोगो को हिंदी शिक्षण के लिए नियुक्त किया।

नागालैंड राज्य एवं पियोंग तेमजेन जमीर का जीवन परिचय तथा हिंदी

चूँकि नागालैंड उस समय असम का हिस्सा था। 1 दिसम्बर, 1963 को अलग राज्य के रूप में भारतीय गणराज्य का हिस्सा बना । यहाँ 16 जनजातियां निवास करती है सभी की अपनी भाषा है परन्तु नागामीज यहाँ की सम्पर्क भाषा के रूप में विघमान है जो बोलने में देवनागरी लिपि के असमिया भाषा जैसी प्रतीत होती है ।

नागालैंड में हिंदी के विकास के लिए जो सबसे पहले आगे बढकर आये उनका नाम था श्री मार्नुसंग पियोंग्तेमजन जमीर वे एक सहज, सरल, शांतचित्त, कर्मठ, संवेदनशील और सामाजिक समरसता के व्यक्तित्व से ओतप्रोत थे। राष्ट्रभाषा हिंदी, नागरी लिपि महात्मा गाँधी और भारत के अतिरिक्त उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता था, उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता था|

उनका कथन था कि हिंदी 'भारत देश' को जोड़ती है। हिंदी भारत देश का प्राण है और भारत की गरिमा है,अस्मिता है। जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए उन्होंने उन सभी कठिनाईयो का सहज एवं सरलता के साथ समाधान करते गये। उनमे त्याग और समर्पण का जो भाव दिखता था वह केवल राष्ट्र भाषा हिंदी नगरी लिपि महात्मा गाँधी और भारत देश के प्रति ही था। हिंदी नगर परिसर में ही इन्होने महात्मा गाँधी शोध एवं पुस्तकालय स्थापित किया है।

गाँधी जी की महत्वाकांक्षी कार्यो को वे अपने जीवन में तो पूर्ण नही कर सके फिर भी जमीर साहब ने किरीटभाई पटेल और उनके सहयोगी बन्धुओं के सहयोग से महात्मा गाँधी की प्रतिमा स्थापित करने में सफलता प्राप्त की तथा पुस्तकालय में 3000 से भी अधिक पुस्तके संरक्षित किया। तेमजेम जमीर का समर्पित आदर्श जीवन सदैव नागालैंड में जन जन के लिए प्रेरणा का स्रोत है। जमीर साहब हिंदी को लेकर कितने संवेदनशील थे। इसका एक उदाहरण उनके द्वारा लिखी गयी हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा गीत से देख सकते है :-

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा, हिंदी हमारी जान है

हिंदी जोड़ेगी तोड़ेगी नहीं, हिंदी नागा की शान बने

आओ हवा फैला दो नागालैंड गाँव गाँव में

हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा[4]।

जमीर साहब के हृदय में राष्ट्र भाषा हिंदी, नागा बोली भाषा के लिए नागरी लिपि और महात्मा गाँधी ही वास करते थे। उनका कहना था –

'एक भाषा हो भारत जननी, एक हृदय है भारत जननी'

जमीर साहब की वजह से ही नागालैंड में हिंदी का 'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक हिंदी का विकास और प्रवेश संभव हुआ है।

नागालैंड प्राकृतिक खनिज सम्पदाओ से भरपूर दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र है। यहाँ के समाज में आपसी भाई-चारा और मामा-भगिना जैसे प्रेम संबंध आत्मीय है। नागालैंड के वीर रणबाकुरो ने ब्रिटिश सत्ता को 1830 से 1850 तक नागालैंड की जमी पर पैर नही रखने दिया। लगभग 50 वर्षो तक ये संघर्ष चला। इस संघर्ष की कहानी यहा के लोगो द्वारा सुन और देख सकते है, खोनोमा का रक्त रंजित इतिहास आज भी खोनोमा गाँव में अवस्थित पत्थर नागा वीरो की याद दिलाते है, पांगती के जाबाज देश भक्त लोथा और पांसाइ के वीर कोन्याक नागा समाज का स्वतन्त्रता के संघर्ष भुलाया नही जा सकता। इसी जमी से पैदा हुवे राष्ट्रभाषा प्रेमी जमीर साहब जिनके हृदय में हिंदी भाषा के प्रति अथाह प्रेम था।

जमीर साहब का जन्म मोकोंग्चुंग जिले के लोंग्सा नामक गाँव में 10 जून 1936 को हुआ था। लोंगसा एक मिथक एवं रहस्यमयी ग्राम है। जिसकी भूमि कथा-कहानियों एवं लोकगीतों से गूंजती रहती हैं। यह सनातन परंपरागत भूमि है, यह परंपरागत काब्य लोकथाओं की भूमि हैं। जिस भूमि पर 'आओ नागा' समाज का जीवन परंपरागत रीती-निति के आधार पर स्वत: होता रहता है। इसी भूमि पर आओ लोक साहित्य एवं काब्य का क्रमिक मौखिक विकास स्वत: दादी-नानी पूर्वजों से होता गया। यह रहस्यमयी ग्राम दिखू नदी के एक किनारे पर अवस्थित है। लोक साहित्य एवं काब्य लोकथाओं में दिखू नदी का विशेष अवदान है। यह ग्राम अनेक मिथक एवं रहस्यमयी प्रसंगों को अपने कोख में आने वाली पीढ़ियों के लिए सँजो कर आज भी रखा है। दादी-नानी आज भी इन मिथक रहस्यमयी प्रसंगों को अपने नैनिहालों को सुनाती रहती है और उसके परिणामों से अपने संतानों को दूर रहने तथा सुरक्षित रहने का उपाय भी बताती रहती है।

घर की बूढी दादी बच्चों को रहस्यमयी लोक कथाये सुनाया करती थी। "ग्राम में एक तालाब था, आज भी वह तालाब है। तालाब, अर्थात आओ भाषा में (अवत्स)। उस तालाब में एक राक्षसी रहती थी। वह भयंकर राक्षसी थी। उसे मानव का रक्त पसंद था। वह लालच देकर बच्चो को अवत्स के निकट बुलाती थी। उन्हें पकड़ कर तालाब के अंदर ले जाती थी। और फिर वह बच्चा गायब हो जाता था'[5]। लोंग्सा ही वह रहस्यमयी आओ परंपरागत ग्राम है, जहाँ 10 जून 1936 को एक शिशु बालक ने जन्म लिया था। शिशु बालक के पिता का नाम मार्नुसंग जमीर और माता का नाम किकाजिला लंगकुमेर था। शिशु बालक का नाम रखा गया पियोंगतेमजें जमीर। परंपरानुकूल पिता के मूल नाम को जोड़ कर पियोंगतेमजें का पूरा नाम निश्चित हुआ- मर्नुसंग पियोंगतेमजेंजमीर।

इनकी प्राथमिक शिक्षा तो इनके गाँव से ही हुई। लेकिन इनकी हिंदी में रूचि होने के वजह से वह हिंदी सिखने के लिए 1962 में वर्धा चले गये| वहा उन्होंने वर्धा के राष्ट्र भाषा प्रचार समिति में दाखिला लिया। जमीर सहब ने सबसे पहले वर्धा में गुरु राधेश्याम सिंह गौतम से हिंदी भाषा का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त किया तथा वह हिंदी भाषा में पारंगत हुवे। गुरूजी गौतम से तो उनका गहरा संबंध था। हिंदी पाठ्यक्रमो के आधार पर प्रारंभ में उनकी शिक्षा परिचय से प्रारंभ हुआ। परिचय का ज्ञान प्राप्त करने में उन्हें बहुत ही परिश्रम करना पड़ा था। वर्णक्षरों के उच्चारण दोष से वे बहुत ही चिंतित रहते थे।

उन्होने उसके बाद मन को दृढ बना कर फिर से वर्णाक्षरों के उच्चारण की शिक्षा शुरू किया। वर्धा में सभी शिक्षक उनके साथ प्रेम से तथा धीरज से उच्चारण करते थे। फिर वे उनका परिचय हिंदी में परिचय पूछते थे। जमीर साहब को प्रवेश, कोविद और रत्ना की शिक्षा में तो अधिक कठिनाईयों का सामना नहीं करनी पड़ी। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

के प्रधानमंत्री की विशेष कृपा उनके ऊपर रहती थी। वे कहते थे- पियोंग, तुम्हें नागालैंड में राष्ट्रभाषा हिंदी की हवा को सम्पूर्ण नागालैंड में फैलाना ही होगा। गुरूजी राधेश्याम गौतम का मार्गदर्शन कदम-कदम पर मिलता ही रहता था।

इस प्रकार जमीर ने 1966 में रत्ना की परीक्षा पास कर ली। हिंदी भाषा की शिक्षा में रत्ना की शिक्षा स्नातक योग्यता के समतुल्य मान्यता प्राप्त है। रत्ना की शिक्षा प्राप्त करने के बाद जमीर साहब ने नागालैंड के मोकोंग्चुंग में पहले सरकारी हिंदी शिक्षक के रूप में अपनी सेवा प्रारम्भ की उन्होंने स्थानीय बोली भाषा का शब्दकोश हिंदी में प्रकाशित किया। जमीर साहब नागालैंड के गाँव-गाँव जाकर प्रवास करके नागा समाज के बीच हिंदी का प्रचार और उसकी उपयोगिता समझाने लगे वे लोगो से कहते थे कि:-

राष्ट्रभाषा हिंदी प्रिय भाषा, भाषा हिंदी मृदु भाषा।

भाषा हिंदी पढ़-लिख कर, हिंदी शिक्षक बन जाओ[6]।।

जमीर साहब ने अपनी पत्नी (पोंगेरतुला लंग्कुमर) को हिंदी सिखाया। वे कहते थे कि अगर मेरी धर्मपत्नी साथ नहीं देती तो शायद मैं नागालैंड में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कभी नहीं कर पाता। वे मेरे कार्यों में सामान सहभागी रही साथ ही उन्होंने दोनों बेटियां और एक बेटे को भी हिंदी सेवा में पारंगत बनाया जो आज नागालैंड के सरकारी विद्यालयों में हिंदी शिक्षक के रूप में अपनी सेवा दे रहे है।

जमीर साहब के आने से नागालैंड में हिंदी भाषा का पठन-पाठन शुरू हो गया था। उनकी 1970 में पहली नियुक्ति तुएनसांग जिले के किशोर ग्राम के माध्यमिक सरकारी विद्यालय में हुई। अहिन्दी प्रदेश में उनका हिंदी ज्ञान ने विद्यालय में हिंदी का शुद्ध परिवेश निर्माण करने लगा। उनकी व्यवहारिक शिक्षण कला उन्हें एक सफल आदर्श शिक्षक के रूप में रूपांतरित करने लगी। वे विद्यार्थी समाज में एक आदर्श शिक्षक बनने लगे। ग्राम समाज, शिक्षक समाज और विद्याथियों के लिए गुरूजी पियोंग तेमजेन आदर्श गुरूजी तेमजेन बन गए। योग्यता जो भी हो, किन्तु कर्म- कुशलता छिपी नहीं रहती है। गुरूजी तेमजेन की कुशलता ने उन्हें अल्प समय में ही साधारण शिक्षक से एक प्रशिक्षक पद पर प्रोन्नत कर दिया। तुएनसांग जिला के जूनियर टीचर इंस्टीट्यूट से उन्हें चिस्सोर के माद्यमिक विद्यालय से स्थान्तरित कर दिया गया। शिक्षक प्रशिक्षक के कार्यों में उनकी निपुणता से शिक्षक, विद्यार्थी ही नहीं सरकारी शिक्षा विभाग के अधिकारी भी प्रसन्न रहा करते थे।

पुन: 1971 के उत्तराद्ध में उन्हें सरकारी उच्च विद्यालय तुएनसांग में प्रोन्नत कर स्थान्तरित कर दिया गया। हिंदी की सेवा में एक आदर्श शिक्षक स्वरुप सतत तीन वर्षों के कार्यों ने उनका हिंदी भाषा के प्रति सेवा एवं समपर्ण एक आदर्श शिक्षक के लिए सराहनीय ही नहीं तो प्रत्यक्ष उदहारण बन गया था। उस समय नागालैंड में हिंदी का विरोध चरम सीमा पर था। उन्हें आये दिन हिंदी कार्य में कठिनाईयां उत्पन्न होती रहती थी। उनके समाज द्वारा ही उन्हें प्रतारित किया जाता था। उसका एक ही कारण था कि ईसाई लोगों की धारणा थी कि हिंदी की शिक्षा से हमारे संतान हिन्दू बन जायेंगे वे हिंदी और हिन्दू में अंतर समझ नहीं पाते थे। उसका प्रभाव आज भी देखने को मिलता है।

हालांकि, उस कठिन परिस्थिति में भी जमीर साहब विचलित नहीं हुए। वो ऐसे संशय भ्रमित लोगों के साथ प्रेम से संवाद करते रहते थे और हिंदी की उपयोगिता और आवश्यकता का महत्व बताते रहते थे। वे महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र की चर्चा करते रहते थे। उनका कहना था कि "लोग अपना कार्य कर रहे है मैं अपना कार्य कर रहा हूँ।" जमीर साहब को हिंदी सिखने की इतनी ललक थी कि वे सरकारी नौकरी में होते हुए एक साल का अवकाश लेकर स्नातक शिक्षा के लिए केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा चले गए। वहां से आने के बाद 1974-75 में केन्द्रीय हिंदी शिक्षण संस्थान दीमापुर में प्रध्यापक पद पर नियुक्त हो गये। वहां पर कुछ दिनों तक काम करने के बाद 1982 में पद छोड़ दिया।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा से मान्यता प्राप्त एकमात्र राष्ट्रभाषा हिंदी परीक्षा केंद्र डिमापुर नगर में चल रहा था। उसकी अवस्था बहुत ही दयनीय थी। मणिपुर निवासी रघुचंद्र सिंह उसके संचालक थे। वे बहुत ही परिश्रमी थे। फिर भी हिंदी परीक्षा के लिए विद्यार्थियों में भावनात्मक विकास नहीं हो पा रहा था। एक दिन वे पियोंग तेमजेन जमीर से मिले।

उन्होंने पियोंग तेमजेन से कहा 'हिंदी के प्रति रूचि समाज में अब तक विकसित नहीं हो पा रहा है। मेरे अथक परिश्रम के बाद भी मैं कुछ नहीं कर पा रहा हूँ । अब आप ही मुझे बताए, मैं क्या करू?पियोंग तेमजेन का उत्तर था आप लगे रहिये। एक दिन सफलता जरुर मिलेगी। नहीं जमीर जी , अब मैं थक गया हूँ, मेरी धैर्यता समाप्त हो गयी है। आप ऐसा क्यों कहते हैं। नागालैंड में आपकी हिंदी सेवा सम्मानित है – जमीर जी ने कहा| यह तो ठीक है, किन्तु अब मैं अपने घर मणिपुर वापस जाना चाहता हूँ। परन्तु, संस्था को कैसे बंद कर दू। वेदना होती है। बहुत ही कष्ट-परिश्रम से हिंदी परीक्षा केंद्र को खड़ा किया है – रघुचंद्र सिंह ने अपनी वेदना प्रकट की'[7]।

वर्ष 1988 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति , वर्धा से अनुमोदित राष्ट्रभाषा हिंदी परीक्षा केंद्र का संचालन रघुचंद्र सिंह ने पियोंग तेमजेन जमीर को सुपुर्द कर मणिपुर हमेशा-हमेशा के लिए डिमापुर से विदाई ले ली। हिंदी परीक्षा केंद्र का जर्जर को ढाचा को किसी प्रकार से पियोंग तेमजेन जमीर चलाते रहे। संपर्क, परिश्रम और साधना के बल पर पियोंग तेमजेन के अथक प्रयास से धीरे–धीरे हिंदी परीक्षा केंद्र की व्यवस्था में प्राण आने लगा। शिक्षार्थियों की संख्या भी बढ़ने लगी। हिंदी परीक्षा केंद्र के माध्यम से पियोंग तेमजेन जमीर वर्षों तक राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार और प्रसार एक हिंदी सेवक के रूप में करते रहे। इसी दौरान उन्होंने परीक्षा केंद्र को अपनी स्व-भूमि पदमपुखुरी डिमापुर में स्थान्तरित कर लिया।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने पियोंग तेमजेन का हिंदी प्रेम और प्रचारात्मक भूमिका का ध्यान रखते हुए उन्हें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के महासमिति में एक मानक सदस्य के रूप में मनोनीत कर उन्हें सम्मानित किया। गुरूजी तेमजेन का हिंदी प्रेम उनके निवास का सम्पूर्ण परिसर ही नहीं तो सटे हुए सम्पूर्ण क्षेत्र को हिंदी नगर के नाम से जाना जाता है। हिंदी नगर, पदमपुखुरी पियोंग तेमजेन का एक राष्ट्रिय पहचान बन चुका है। डाकिया भी उस क्षेत्र में पत्र-पत्रिकायें हस्तगत करने आता है तो पते के स्थान पर लिखा हिंदी नगर, पदमपुखुरी का सुशोभन गुरूजी पियोंग तेमजेन का राष्ट्रभाषा हिंदी प्रेम के प्रति एक व्यवहारिक स्वरुप स्वत: आवाहन देते रहता है –

एक भाषा हो भारत जननी ,

एक हृदय हो भारत जननी[8]।

इस प्रेरणा ने काफी सकारात्मक काम किया। जमीर साहब द्वारा बिना सरकारी मदद के हिंदी नगर में स्थापित हिंदी महाविघालय में लड़कों और लड़कियों की संख्या बढ़ने लगी। इस महाविघालय द्वारा हिंदी में कोविद और रत्ना की डिग्री शुरु कर दिया था।

जमीर साहब ने राष्ट्र भाषा हिंदी महाविघालय की नीव दीमापुर के आलावा उग्गमा, मेजिफेमा, त्वेंसाग, वोखा, किफरे, मोन, कोहिमा, अबोइ जैसे प्रमुख स्थान पर स्थापित किया। उन्हें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की महासमिति ने सर्वसम्मती से नागालैंड का प्रान्त संचालक बना दिया। वे सम्पूर्ण नागालैंड में राष्ट्रभाषा हिंदी महाविघालय के संस्थापक थे। जमीर साहब के सहयोग से राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, नागालैंड भाषा परिषद, नागरी लिपि परिषद के गठन के साथ ही वे नागालैंड में हिंदी सिख रहे छात्रों को भारतीय हिंदी समाज से परिचित कराना चाहते थे।

इसके लिए उन्होंने डॉ अजिता जो गाज़ियाबाद में हिंदी प्रशिक्षण केंद्र चलाती थी से संपर्क किया और उनसे निवेदन किया - **रत्ना उपाधि से निपुण हमारे नागा युवाओ को और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। मेरी इच्छा है कि इन्हें एक आदर्श शिक्षक बनाने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण देना बहुत जरूरी है।** वर्षो तक यह केंद्र नागा युवा समाज को हिंदी एवं शिक्षण शास्त्र में प्रशिक्षित करता रहा। आज के समय नागालैंड में हिंदी शिक्षको संख्या सम्मानजनक दिखती है। प्राथमिक विघालयो में 2400 से ज्यादा हिंदी शिक्षक साथ ही 200 से ज्यादा माध्यमिक शिक्षक (टी.जी.टी+पी.जी.टी) उच्चतर महविघालयों में भी हिंदी आचर्यो की नियुक्ति जारी है। नागालैंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय में तीन आचर्यो के साथ 14 शोध छात्र कार्य कर रहे है। जमीर साहब की सहयोग से आज नागालैंड में कई हिंदी सेवी संस्थाए है जैसे: –

1. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, दीमापुर
2. केन्द्रीय हिंदी संस्थान, दीमापुर
3. नागालैंड भाषा परिषद, कोहिमा
4. नागरी लिपि परिषद, दीमापुर
5. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, कोहिमा
6. हिंदी विभाग, नागालैंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय

निष्कर्ष

अत: हम कह सकते है कि जमीर साहब हिंदी के वो पुरोधा जिनके प्रेरणा स्रोत महात्मा गाँधी रहे। जिन्हें नगालैंड में हिंदी को स्थापित करने में बहुत ही संघर्ष करना पड़ा। नागालैंड में जब भी हिंदी की बात होगी जमीर साहब के बिना पूरी नहीं होगी। पुरे नागालैंड में आज भी लोग उन्हें बहुत ही सम्मान के साथ देखते है। सब लोग उन्हें गाँधी के नाम से ही पुकारते है। जमीर साहब भारत के कई हिंदी सेवी पुरस्कारों को सुशोभित कर चुके थे। लेकिन नागालैंड के गाँधी के संघर्ष को असली सम्मान भारत सरकार द्वारा 20 मार्च 2018 में पद्मश्री से सम्मानित कर के किया गया। 12 जून 2021 को नागालैंड के गाँधी हमेशा के लिए ईश्वरीय सत्ता में विलीन हो गये। जमीर साहब हमेशा कहते थे–

लक्ष्य न ओझल होने पाए, कदम बढ़ा कर चल।

मंजिल तेरी पग चूमेगी, आज नही तो कल[9]।।

लेखकों के योगदान

(1) डॉ. बृजेश कुमार: अवधारणा, मूल शोध एवं लेखन तथा प्राथमिक विश्लेषण.

(2) अंशु चन्द्र: कार्यप्रणाली, समीक्षा एवं एडिटिंग.

सन्दर्भ सूची:-

1. शुक्ल, रा. (2002). *हिंदी साहित्य का इतिहास* (संस्करण 2002). लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
2. महात्मा गांधी. सम्पूर्ण गाँधी वांग्मयvol.57 सार्वजानिक सभा तिनसुकिया में 20 अप्रैल 1934. पृष्ठ सं. 458

3. नागालैंड. (2011). इनसायकलोक्लोपेडिया ब्रिटानिका.

https://www.britannica.com/place/Nagaland-state-India

4. यथावत पत्रिका. डॉ. संजीव कुमार (संपा). दिसम्बर 2016 अंक. पृष्ठ सं. 44

5. पंकज सिन्हा, नागालैंड में राष्ट्रभाषा हिंदी के जनक,पृष्ट सं. 4,नागालैंड स्कूल शिक्षा मिशन स्कूल शिक्षा विभाग, 2024.

6. पूर्वोदय हिंदी समाचार पत्र. 6 मई 2010. पृष्ठ सं. 5

7. नागालैंड पेज, न्यूज़ पेपर. 10 सितम्बर 2000, पृष्ठ सं. 4

8. ईस्टर्न मिरर डेली न्यूज़ 16 मई 2014. पृष्ठ सं. 3

9. सिन्हा, प. (2024). *नागालैंड में राष्ट्रभाषा हिंदी के जनक* (पृ. 4, 24). नागालैंड स्कूल शिक्षा मिशन, स्कूल शिक्षा विभाग.

10. बेर्ग , बी . ल., एंड लुने , एच. (2017). *गुणात्मक अनुसंधान पद्धतियाँ: सामाजिक विज्ञानों के लिए* (9वां संस्करण). पियर्सन.

11. कोहेन , एल ., मनिओन , एल., एंड मॉरिसन , के . (2018). *शिक्षा में अनुसंधान पद्धतियाँ* (8वां संस्करण). रूटलेज. https://doi.org/10.4324/9781315456539

12. गुडसन, आई., एंड सीकेस, पी. (2017). *शैक्षिक परिवेश में जीवन-इतिहास अनुसंधान: जीवन से सीखना.* रूटलेज. https://doi.org/10.4324/9781315248851